ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 195-197

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

वर्तमान शिक्षा में डॉ0 एनी बेसेण्ट के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

उदय प्रताप सिंह E-mail: udaipgkp@gmail.com

Received- 13.02.2021, Revised- 16.02.2021, Accepted - 21.02.2021

सारांश : ***प्राचीन काल में हमारे देश में शिक्षा का स्तर दूसरे देशों की अपेक्षा बहुत उच्चतम था। उस समय की शिक्षा एक व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास कर पाने में सफल थी। अँग्रजों के समय शिक्षा की स्थिति ठीक नहीं थीं परंतु स्वतंत्रता के बाद इसमें प्रगति हुई। आज के समय में भारत में शिक्षा का स्तर निम्न दिखाई पड़ता है। इसमें न तो छात्र योग्यता पा पाते हैं और न ही उनमें व्यवसाय से संबंधित कोई कौशल दिखलाई पड़ते हैं।***

'वर्तमान शिक्षा पद्धति में बहुत कमियाँ हैं', इसके प्रति इतना अधिक विद्वेष है कि इसके आमूल परिवर्तन की माँग पिछले कई वर्षों से की जा रही है।' अनेक शिक्षा आयोगों ने अद्यतन शिक्षा पद्धति को अनेक कारणों से ठीक नहीं बताया है। वे इसमें परिवर्तन की बात कहते हैं परन्तु फिर भी इसमें अभी तक बदलाव नहीं आया है। आज के समय में शिक्षा स्तर में ह्रास के निम्नलिखित कारण हैं :–

1. ***शिक्षा के अनिश्चित उद्देश्य।***
2. ***पाठ्यक्रम का दोषपूर्ण होना।***
3. ***अयोग्य शिक्षक।***
4. ***परीक्षा प्रणाली का कारगर न होना।***
5. ***शिक्षा का माध्यम।***

कुंजीभूत शब्द– उच्चतम, सम्पूर्ण विकास, शिक्षा, स्वतंत्रता, प्रगति ।

'इसके अतिरिक्त बेरोजगारी जातिवाद, भिक्षावृत्ति वेश्यावृत्ति, आत्महत्या, निर्धनता, अस्पृश्यता मद्यपान, नैतिक पतन, अपराध, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, भाषावाद, भ्रष्टाचार, युवा–असन्तोष जैसी सामाजिक समस्याओं का प्रभाव भी शिक्षा पर प्रत्यक्ष रूप से दृश्टिगत होता है।'

इसलिए अब यह जरूरी है कि हर व्यक्ति अपने भविष्य निर्माण की ओर एक सचेतन कदम बढ़ाए। एनी बेसेण्ट भारत के भविष्य की एक महती निर्माता के रूप में ग्रहण किया हैं। उन्होंने ऐसी शिक्षा को आवश्यक बताया, जो हर तरह से सर्वांग की श्रेणी में आती हो। षैक्षिक सोच दिया।

बेसेण्ट एक पूर्ण व्यक्तित्व की महिला थीं जिनमें स्वामी विवेकानंद, महात्मा बुद्ध, गाँधीजी आदि महापुरुषों के दर्शन का रूप देखने को मिलता है। उनके शिक्षा के संबंध में विचार ही आधुनिक समय में प्रासंगिक दृष्टिकोण को दिखाते हैं। इसके बारे में पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था – "आज की पीढ़ी के लिए वह नाम मात्र हो सकती हैं, लेकिन मेरी और मेरे से पहले की पीढ़ी के लिए उनका बहुत बड़ा व्यक्तित्व था, जिसने हम लोगों को बहुत प्रभावित किया। इसमें कोई शक नहीं हो सकता कि भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में उनका योगदान बहुत अधिक था। इसके अतिरिक्त वह उन लोगों में से थी जिन्होंने हमारे ध्यान हमारी सांस्कृतिक धरोहर की ओर आकर्षित किया और हममें उसके प्रति गर्व पैदा किया।"

शिक्षा का अर्थ– बेसेण्ट जी शिक्षा का एक बहुत ही सच्चा अर्थ बताती हैं। उनके अनुसार शिक्षा वही है जो केवल आंतरिक शक्तियों को केवल पूर्ण ही नहीं वरन् उनको प्रशिक्षित भी करती है। वे शिक्षा को अनुशासन मानती हैं। एनी बेसेण्ट के अनुसार, "बालक में अन्तर्निहित उन सम्पूर्ण शक्तियों का विकास करना, जिन्हें वह अपने साथ लेकर संसार में आता है, शिक्षा है।"

एनी बेसेण्ट ने शिक्षा की परिभाषा इस प्रकार बताई है–"मनुष्य की सन्नितहित सम्भावनाओं एवं शक्तियों को विकसित और प्रशिक्षित करना ही शिक्षा है।"

एनी बेसेण्ट की घोषणा है कि– "बालक एक दैवी प्राणी है, वह अनेक जन्मों के संस्कार अपने साथ लेकर आता है इसलिए उसे वह अवसर प्राप्त होना चाहिए, जिससे वह अपनी सन्निहित सम्भावनाओं एवं योग्यताओं को विकसित कर सके। पुस्तकीय ज्ञान छात्र में भरना अज्ञानता है। इसे तो वह कभी भी पुस्तकालय की पुस्तकों को पढ़कर प्राप्त कर सकता है।"

बेसेण्ट जी शिक्षा के पुनर्निर्माण की बात कहती हैं क्योंकि उनको प्राचीन शिक्षा एकांगी दिखाई दी। एनी बेसेण्ट ने लिखा है कि–"आजकल भारत में शिक्षा का उद्देश्य उपाधि प्राप्ति है। शिक्षा असफल होती है जबकि बहुत से असंयुक्त तथ्यों के द्वारा बालक का मस्तिष्क केवल रटकर भर दिया जाता है और तथ्य इस प्रकार डाला जाता है जैसे रद्दी टोकरी में फालतू कागज फेंके जाते हैं। जैसे इन्हें परीक्षा के कमरे में उलटकर खाली कर दिया जाता है तथा खाली टोकरी (मस्तिष्क) लेकर संसार में जाया जाता है। यह अच्छी शिक्षा नहीं है।"

इस तरह एनी बेसेण्ट के द्वारा कहा गया शिक्षा का अर्थ वर्तमान समय के लिए पूर्णतः प्रासंगिक है।

शिक्षा सिद्धान्त– एनी बेसेण्ट के कथनानुसार शिक्षा की रूपरेखा वैज्ञानिक होना चाहिए। एक बालक को अपने आंतरिक गुणों को विकसित करने हेतु तैयार करना आवश्यक है। उसकी शिक्षा इस प्रकार से हो कि वह अपनी मातृभूमि की सेवा

शोध छात्र, श्री गाँधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय (सम्बद्ध– वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय), मालटारी, आज़मगढ़ (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

करने में अपने आपको सक्षम बनाने का भाव जाग्रत कर सके।
छात्रों के द्वारा अलग–अलग परिस्थितियों में सामंजस्य का भाव बैठाने की क्षमता उत्पन्न होनी चाहिए। उनकी षिक्षा की व्यवस्था आयु के अनुकूल होनी चाहिए। उसके शिक्षक का उसमें विश्वास होना चाहिए एवं उसे माता–पिता की सेवा करने वाला बालक भी बनना चाहिए। उसे सदाचार, आत्मसंयम, ब्रह्मचर्य आदि गुणों का विकास करना चाहिए। अतः आज शिक्षा में इनके द्वारा सम्पादित समस्त सिद्धान्त प्रासंगिक हैं।

शिक्षा का उद्देश्य– एनी बेसेण्ट ने "इण्डिया : बांड आर फ्री" में लिखा है– "शिक्षा का लक्ष्य क्या होना चाहिए?" इसके उत्तर में उन्होंने स्वयं कहा है कि शिक्षा का उद्देश्य एक बालक का सर्वांग विकास करना है।

एनी बेसेण्ट के कथनानुसार शिक्षण संस्थाओं में बालकों के लिए शारीरिक शिक्षा का विधान आवश्यक है।

एनी बेसेन्ट का विश्वास धर्म के साथ–2 आध्यात्म में भी बहुत था। उन्होंने लिखा है कि–"एक बात ऐसी होती है जो भारत का ह्रदय नष्ट किये जा रही है और यह आधुनिक भौतिकता है।"

धर्म से ही मनुष्य एकता का अनुभव करना सीख पाता है। राष्ट्रीयता का विकास धर्म से होता है और धर्म के द्वारा की मानवता विकसित होती है। इसलिए जीवन में धार्मिक शिक्षा अवश्य होनी चाहिए।

एनी बेसेण्ट का मत था कि एकाग्री शिक्षा में न होकर अपितु सभी धर्मों को मानने वालों के सिद्धांत शामिल हों जिससे धर्म का ज्ञान मिलेगा व विचार भी सुदृढ़ व व्यापक बनेंगे। उन्होंने संवेगात्मक विकास का भी पूर्णरूप से समर्थन किया है। बेसेण्ट ने ज्ञान प्राप्ति हेतु एकाग्रता को उच्च स्थान प्रदान किया है।

शिक्षा का स्वरूप– एनी बेसेण्ट शिक्षा को विज्ञान के रूप में देखना पसंद करती हैं। वे कहती हैं कि इसके द्वारा दिया जाने वाला प्रशिक्षण व्यवस्थित तरीके का होगा व इसके द्वारा बालकों की जन्मजात शक्तियों को निखार मिल पायेगा। एनी बेसेण्ट के अनुसार, "बालक में अनुकरण की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। यह किसी प्रकार की मौलिकता में बाधक नहीं होती, इसलिए एक अच्छे शिक्षक को स्वाभाविक नेताओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए तथा बालकों को आज्ञाकारी बनाने के लिए इस प्रवृत्ति का उपयोग करना चाहिए। अनुशासन और अच्छी आदतों का अभ्युदय इन्हीं कारणों से सम्भव होगा। सलाह तथा प्रचार का प्रभाव भी बालकों पर पड़ता है।"

उनके कथनानुसार, "शिक्षा व्यक्ति में उन सब पूर्णताओं का विकास है, जिसके लिए वह योग्य है।"

इसलिए एनी बेसेण्ट के द्वारा बताया गया शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिक माना जा सकता है और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है।

शिक्षा का माध्यम– एनी बेसेण्ट 'मातृभाषा' को शिक्षा का माध्यम बनाने की बात कहती हैं। उनके अनुसार एक बालक अपनी मातृभाषा में ही किसी विषय को ठीक तरह से समझ सकता है। वे विदेशी भाषा को यहाँ पर महत्व नहीं देती हैं। वे इसे अन्याय होना मानती हैं। इस भाषा को वे द्वितीय भाषा कहती हैं। एनी बेसेण्ट के अनुसार, "किसी देश की जनता को अराष्ट्रीय बनाने के लिए शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा रखने से बढ़कर कोई दूसरा साधन नहीं है। इसलिए भारत को सांस्कृतिक एवं शैक्षिक दृष्टि से विकसित करने के लिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को बनाना होगा।"

उनके अनुसार सत्ता का यह कर्तव्य है कि वह वर्तमान शिक्षा में सुधार लाये। शिक्षण के काम उसी भाषा में ही करें, जिससे शिक्षा के उद्देश्यों को पाया जा सके। उनके अनुसार विदेशी भाषा में मौलिक चिन्तन संभव नहीं है। अतः उनके द्वारा बताए गए तरीके से पठन–पाठन में स्वभाविकता विकसित होगी। इसलिए आज वह अपनाने योग्य है।

शिक्षा का पाठ्यक्रम– एनी बेसेण्ट के मत के अनुसार बालक विभिन्न स्वभा के होते है। इसलिए पाठ्यक्रम में भी विभिन्नता होनी चाहिए। एनी बेसेण्ट ने आदर्शवादी दर्शन पर पाठ्यक्रम निर्मित किया है इसलिए धर्म, दर्शन, संस्कृत, अरबी, फारसी आदि पर अधिक जोर दिया जाता है। उन्होंने उपयोगिता सिद्धांत की महत्ता दी है। उन्होंने "न्यू इण्डिया" में लिखा है– "राष्ट्रीय शिक्षा राष्ट्रीय प्रकृति के अनुकूल हर एक बिन्दु पर होनी चाहिए और उसे राष्ट्रीय चरित्र का विकास करना चाहिए।"

शिक्षक– एनी बेसेण्ट के अनुसार, "अध्यापक अपने शिष्यों को एक अमर आत्मा के स्वरूप में देखें। विद्यार्थियों को अपने महान वंशानुक्रम तथा भव्य भावी जीवन का ज्ञान नहीं होता है। इस तथ्य से वे अवगत नहीं रहते कि उनमें महान कार्य करने की क्षमता है, वे अद्भुत शक्ति के भण्डार हैं, शक्ति के द्योतक हैं, प्रकाश–पुंज हैं। वे समाज एवं विश्व से अवगत नहीं रहते हैं। इन समस्त विषयों की जानकारी शिक्षक ही उन्हें दे सकेंगे।"

अध्यापक द्वारा छात्रों के व्यक्तिगत जीवन का सम्मान होना चाहिए। उसे आदर्श रूप में प्रस्तुत होना चाहिए। यदि उसमें प्यार व सहानुभूति का भाव है तो वह शिक्षा देने में समर्थ है। उसका स्वयं का जीवन सादा हो व उसके विचार उच्च श्रेणी के हों तथा वह अपने विषय में भी दक्षता रखता हो। एनी बेसेण्ट कहती हैं कि– "तुम्हें सबसे पहले जो करना है वह है बालक का अध्ययन और यह पता लगाना कि उनमें कौन से गुण हैं, कौन सी क्षमताएँ हैं और कौन सी शक्तियाँ हैं और यह तुम उस समय कर सकते हो जबकि तुम उन्हें बहुत बड़ी मात्रा में स्वतन्त्रता दे दो।"

उनके अनुसार एक शिक्षक को साफ चरित्र वाला होना चाहिए। उनके कथनानुसार जो कर्तव्य व

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-I, Issues-19, YEAR- March-2021

उत्तरदायित्व शिक्षक कार्य हेतु नितान्त आवश्यक हैं, यदि उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में लेकर आया जाए तो इस क्षेत्र में परिवर्तन अवश्य होंगे।

शिक्षार्थी– एनी बेसेण्ट ने चार आश्रमों को आवश्यक माना है। यह हैं– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास। उनके कथनानुसार छात्रों को ब्रह्मचर्य नियम का पालन करना चाहिए। उसमें पढ़ने के लिए एक इच्छा होनी चाहिए व उसे प्रयत्नशील भी होना होगा। उसमें चिन्तन–मनन के गुण होने चाहिए। गुरूओं के प्रति आदर का भाव उसे रखना चाहिए। उसमें सामाजिक गुण विद्यमान होने चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण छात्रों को धर्म का ज्ञान होना चाहिए। छात्रों को आज्ञाकारी भी होना चाहिए। उसे सम्पूर्ण विश्व से प्रेम करना चाहिए। उनके अनुसार यह सब सच्चा धर्म है।

परीक्षा– एनी बेसेण्ट के कथनानुसार परीक्षा शिक्षा का साधन मात्र होनी चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने पुरातन भारतीय आदर्शों को शिक्षा में लाने के लिए अध्यापकों को संबोधित करते हुए छात्रों में अद्यतन ज्ञान व प्रेरणा को भरने के लिए कहा है। उन्होंने परीक्षा से पहले पाठ्यक्रम की समाप्ति की बात कही है। इस तरह से एनी बेसेण्ट ने अध्यापकों को शिक्षण हेतु एक नवीन मत दिया। अतः परीक्षा संबंधी उनके विचार अद्यतन शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्षत– कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में एनी बेसेण्ट के शिक्षा दर्शन के द्वारा भारत के समाज का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में अनेक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना करके समाज के सभी वर्गों को शिक्षित करने का प्रयास किया गया उनके शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा का अर्थ, शिक्षा सिद्धान्त, शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा का माध्यम, पाठ्यक्रम तथा शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध के द्वारा भारत की शिक्षा का विकास किया जा सकता है। अतः कह सकते हैं कि वर्तमान शिक्षा में एनी बेसेण्ट के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, डॉ० राम सकल : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, पृ० 217.
2. सारस्वत, डॉ० मालती : शिक्षा सिद्धान्त, पृ० 212.
3. पाण्डेय, डॉ० राम सकल : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, पृ० 217.
4. गुप्ता प्रो० लक्ष्मीनारायण व प्रो० मदनमोहन : पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ० 227.
5. गुप्ता प्रो० लक्ष्मीनारायण व प्रो० मदनमोहन : पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ० 2396.
6. Nunn, T.P. : Education ist Data and First Principles, p. 153.
7. सारस्वत, डॉ० मालती : शिक्षा सिद्धान्त, पृ० 212.
8. पाण्डेय, डॉ० राम सकल : विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री, पृ० 220.
9. National Education must meet the National temperament at every point and develop the national char acter. Besant Annie, New India.
10. Singh, Dr. M.s. : The Educational Philosophy of Annie Besant, Naveen Publishing House, Gujrat.
11. गुप्ता प्रो० लक्ष्मीनारायण व प्रो० मदनमोहन : पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षाशास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ० 251.
12. वैद्य, एन० के० (1971) : "डॉ० एनी बेसेण्ट का शैक्षिक दर्शन, शैक्षिक प्रयोग और भारतीय शिक्षा में उनका योगदान" अहमदाबाद विश्वविद्यालय, अहमदाबाद, पी–एच०डी०।
13. वैद्य, एन० के०(1985) : "डॉ० एनी बेसेण्ट और गाँधी जी का शैक्षिकः दर्शन" राँची विश्वविद्यालय, राँची।
14. अग्रवाल, यू० आर० (1977) : "थियोसॉफिकल दर्शन, भारत में शैक्षिक विचार व व्यवहार में योगदान" पटना विश्वविद्यालय, पटना, पी–एच०डी०।
15. नवदीप कौर (2016) : डॉ0 एनी बेसेण्ट के शैक्षिक विचार (1847–1933) सद्भावना–रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट, खंड 6, नंबर 1 पृष्ठः 125–130.

*****